

पद १८०

(राग: झिंजोटी - ताल: दादरा)

खुदा के वास्ते मुझ में खुदा बता देना । ये मैं का गफलत परदा
जरा उठा लेना ॥ध्रु॥ ये नूर किसका है हर चश्म में चमकता है ।
रसूल, महल मुबारक तवाफ कर लेना ॥१॥ तुम्हे नसीब हो मेराज
शबे मुबारक हो । ये जिब्रइल है दिल आपसा बना लेना ॥२॥ वो
लाशरीक हूँ अल्लाह में खुद फना भी फना है । ये जोश वस्ल
निशाने खुदी मिटा देना ॥३॥ न बंदा हूँ न मानिक हर रंग मे खुदा
ही खुदा है । फकीर सूफी का नाजुक बयान सुन लेना ॥४॥